सोजत नस्ल की बकरी पालन से सफलता की ओर अग्रसर

पशुपालक का नाम	:	श्री लालसिंह
पिता का नाम	:	श्री जीवनसिंह
उम्र	:	38 वर्ष
पता	:	कुसुम्बी, लाडनूं (नागौर)
शिक्षा	:	8वीं पास
मोबाईल नं.	:	8079035070

आज जब एक और पशुओं के दाने–चारे एवं दवाई महंगी साबित होने से पशुपालन आर्थिक दृष्टी से कम लाभकारी साबित हो रहा है, वहीं बकरीपालन कम लागत एवं सामान्य देख–रेख में गरीब किसानों एवं खेतिहर मजदूरों की जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन बन रहा है। ऐसे में नागौर जिले के लाडनूं तहसील के कुसुम्बी गांव के लालसिंह जो की एक खेतिहर किसान है, जिन्होंने बकरीपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। इन्होंने दस सोजत नस्ल की बकरी एवं एक बकरे के साथ आज के लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व अपना बकरीपालन व्यवसाय आरम्भ किया। तत्पश्चात उन्होंने पशु विज्ञान केंद्र, बाकलिया (नागौर) आकर बकरी फार्म में बकरियों के रख रखाव एवं खान–पान की जानकरी ली। उन्हें बकरियों के आवास, संतुलित आहार प्रबंधन, ग्याभिन पशुओं के आहार प्रबंधन, ब्रीडर बकरों एवं मेमनों के आहार प्रबंधन के साथ–साथ बकरियों की समुचित वृद्धि हेतु नियमित समय अंतराल पर कृमिनाशक दवा का उपयोग, बकरियों में विभिन्न रोगों हेतु टीकाकरण, खनिज मिश्रण का महत्व आदि के बारे में जानकारी दी गयी जिसे उन्होंने अपनाया एवं जिससे उनकी सभी बकरियां स्वस्थ है एवं उचित वृद्धि प्रदर्शित कर रही है। आज उनके पास 35 बकरियां है। 5 बकरों को उन्होंने एक साल की उम्र में लगभग डेढ़ लाख रुपये में बेच दिए। वे लगभग 1.5 लाख रुपये वार्षिक आय अर्जित कर लेते है। इस बकरी पालन से लालसिंह काफी उत्साहित है साथ ही उज्जवल भविष्य की और अग्रसर है। इसी के साथ वो आस–पास के अन्य किसानों को भी बकरी पालन हेतु प्रेरित करते रहते हैं।

जगदीश के जीवन में उत्तम व्यवसाय सिद्ध हुआ भैंस पालन

पशुपालक का नाम	:	श्री जगदीश सिंह
पिता का नाम	:	श्री भगवान सिंह
उम्र	:	42 वर्ष
पता	:	बादेड, लाडनूं (नागौर)
शिक्षा	:	10वीं पास
मोबाईल नं.	:	9587828561

नागौर जिले के बादेड गांव के जगदीश सिंह ने भैंस पालन में जो मुकाम हासिल किया है, वो आमजन के लिए प्रेरणा स्रोत है। जगदीश सिंह के पिता की मृत्यु के बाद परिवार की सारी जिम्मेदारी उन पर आ गयी, तब उनकी रूचि पशुपालन की तरफ बढ़ी तथा उन्होंने भैंस पालन को आजीविका के साधन के रूप में चुना। इस हेतु वे भैंस पालन से सम्बंधित उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी हेतु पशु विज्ञान केंद्र, बाकलिया (नागौर) आये। जहां उन्हें भैंस पालन हेतु उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों के बारे में विस्तार से समझाया। जगदीश सिंह ने 5 भैंसों से व्यवसाय शुरू किया। अब उनके पास 30 से अधिक भैंसे हैं। जिनसे वे लगभग 250 लीटर दूध रोजाना विक्रय कर लगभग 2.5 से 3 लाख रुपये वार्षिक आय प्राप्त कर रहे है। अब उनके पास 2–3 मजदूर भी काम करते हैं। इस प्रकार जगदीश सिंह ने भैंस पालन को रोजगार के रूप में अपनाकर आज रोजगारदाता बन गये हैं तथा अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणा स्रोत हैं।

मंगतुराम ने भेड़ पालन से पाई आत्मनिर्भरता

पशुपालक का नाम	:	श्री मंगतुराम
पिता का नाम	:	श्री डूंगरराम
उम्र	:	67 वर्ष
पता	:	बाकलिया, लाडनूं (नागौर)
शिक्षा	:	अशिक्षित
मोबाईल नं.	:	7014869135

पश्चिमी राजस्थान में वर्षा की अनिश्चितता तथा सालभर में केवल एक फसल ही होती है। इन सबके बीच किसानों, भूमिहीन या सीमांत किसानों के लिए पशुपालन एक अच्छे विकल्प के रूप में उभरा है। नागौर में भूमिहीन पशुपालकों के लिए भेड़ पालन पशुपालकों के लिए आर्थिक रूप से सबल होने का एक अच्छा स्रोत है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए नागौर जिले के लाडनूं तहसील के बाकलिया गांव के मंगतुराम ने अच्छा उदाहरण पेश किया है। पशु विज्ञान केंद्र, बाकलिया (नागौर) से भेड़ पालन से सम्बंधित प्रशिक्षण प्राप्त कर मंगतुराम ने अपनी एक छोटी–सी जमीन पर भेड़ पालन शुरू किया। अब उनके पास लगभग 30 भेड़ें एवं 20 बकरियां हैं। जिनमें से प्रतिवर्ष कुछ बेच देते हैं। एक भेड़ लगभग 5 से 7 हजार में बेचते हैं तथा साथ ही साथ उनकी ऊन भी बेचकर वे अतिरिक्त आय प्राप्त करते हैं। मंगतुराम लगभग 1 लाख रुपये सालाना आय प्राप्त कर लेते है। इस प्रकार 67 वर्ष के मंगतुराम ने पशु विज्ञान केंद्र, बकलिया (नागौर) से प्रशिक्षण प्राप्त कर जिसमें उन्होंने भेड़–बकरियों में लगने वाले विभिन्न टीके, कृमिनाशक दवाओं का उपयोग, उनके खान–पान, आवास आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा पशुपालन को अपना व्यवसाय अपनाकर गरीबी को पीछे छोड़ते हुए आर्थिक सबल होने की तरफ कदम बढ़ाये हैं तथा अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन रहे हैं।

केंचुआ खाद उत्पादन से बने सफल किसान एवं पशुपालक

पशुपालक का नाम	:	श्री रामनारायण इसरावा
पिता का नाम	:	श्री हनुमाना राम
उम्र	:	52 वर्ष
पता	:	बाडेला, लाडनूं (नागौर)
शिक्षा	:	10वीं
मोबाईल नं.	:	9982988119

यह कहानी है नागौर जिले के लाडनूं तहसील के बाडेला गांव के रामनारायण इसरावा की, जिन्होंने पशु विज्ञान केंद्र, बाकलिया में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया था। यहां पर केन्द्र द्वारा केंचुआ खाद का प्रदर्शन किया गया एवं उसके फायदे बताये गये, जिससे प्रेरित होकर वे कुछ केंचुए केंद्र से लेकर गये एवं अपने घर पर केंचुआ खाद निर्माण शुरू किया, जिससे उन्होंने लगभग 6 क्विंटल खाद तैयार की तथा खेती में काम ली। उनके अनुसार इससे फसल में अन्य वर्षों की तुलना में हर बीघा में 25–30 प्रतिशत फसल का इजाफा हुआ। जिसके बाद वे इसे बड़े स्तर पर उत्पादन कर बाजार में विक्रय हेतु तैयार कर रहे हैं एवं अधिक मुनाफा कमाने की ओर अग्रसर हैं। वे एक वर्ष में 80 से 90 हजार रुपये अर्जित कर लेते है। आज भी रामनारायण पशु विज्ञान केंद्र से जुड़े हुए हैं तथा केंचुआ खाद के अधिकाधिक उत्पादन एवं उनके बाजार में विपणन सम्बंधित जानकारी समय–समय पर प्राप्त करते रहते हैं इसी के साथ वे एक कुशल पशुपालक भी हैं एवं अपने पशुओं के स्वास्थ्य सम्बंधित जानकारी, उनसे अधिक उत्पादन, उनके संतुलित आहार, टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं आदि के उपयोग सम्बन्धी जानकारी भी केंद्र से लेते रहते हैं।